सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-8 **विषय: पाठ्य पुस्तक** **पाठ:5 व्यवहारिक कुंडलियाँ**

भावार्थ:-

1. सांई सब संसार में ------- बिरला कोई सांई।।

***भावार्थ* :** इस संसार में सभी का व्यवहार स्वार्थ से भरा है।

जब तक आपके पास धन है, तब तक सब आपके मित्र बने रहते हैं और आपके साथ घूमते हैं। जैसे ही धन समाप्त होता है, वही मित्र बात करना भी बंद कर देते हैं। कवि कहते हैं कि इस दुनिया का यही दस्तूर (हिसाब) है; निस्वार्थ प्रेम करने वाले बहुत कम लोग होते हैं।

2. दौलत पाय न कीजिए -------- रहत सबही के दौलत।।

भावार्थ: धन प्राप्त होने पर कभी सपने में भी घमंड नहीं करना चाहिए। धन चंचल जल की तरह है जो एक जगह टिक कर नहीं रहता। जब तक जीवन है, तब तक मीठे वचन बोलकर और विनयपूर्ण व्यवहार करके यश प्राप्त करना चाहिए। कवि कहते हैं कि यह धन तो मेहमान की तरह है जो केवल कुछ ही दिनों के लिए पास रहता है।

3. बीती ताहि बिसारि दे,------- कोई बीती सो बीती।।

***भावार्थ* :** जो बीत गया उसे भुला देना चाहिए और आगे आने वाले समय (भविष्य) की चिंता करनी चाहिए। जो काम आसानी से बन सकता हो, उसी में मन लगाना चाहिए। ऐसा करने से न तो काम बिगड़ेगा और न ही लोग आप पर हँसेंगे। मन में यह विश्वास रखें कि बीती बात बीत गई, अब भविष्य के सुख पर ध्यान देना है।

4. बिना विचारे जो करैं,-------- कियो जो बिना बिचारे।।

***भावार्थ* :** कवि गिरिधर कविराय कहते हैं कि मनुष्य को कोई भी कार्य करने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिए। जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम करता है, उसे बाद में पछताना पड़ता है। जल्दबाजी में किया गया काम अक्सर बिगड़ जाता है और समाज में उसकी हँसी होती है। ऐसे व्यक्ति को मन की शांति नहीं मिलती और उसे भोजन, सम्मान तथा मनोरंजन जैसी चीज़ों में भी आनंद नहीं आता। बिना विचार किए किए गए कार्य का दुख और पछतावा लंबे समय तक मन में बना रहता है। इसलिए हमें हमेशा सोच-समझकर ही कोई कार्य करना चाहिए।